कर्बल बीती

लेखकः श्री नजमुल हसन नक़वी साहब "नस्सार"

पहली मजलिस

कर्बल में नबी के नाती पर,
जब तीरन की बौछार भई।
और भोर पहर से संध्या तक,
प्यासे से बड़ी तलवार भई।।

जब सूर अली का रन पे चढ़ा,
तो बहती नदिया फांद पड़ा।
जब जल भर निकसा लश्कर से,
तब तीरन की बौछार भई।।

लो हाथ कटे हैं शानन से,
और मश्क छिदी सब तीरन से,
जल जितना तीरन मार उड़ा,
हर बूँद लहू की धार भई।।

एक नन्हा बालक प्यासा था,
और मुखड़ा जैसे तारा था।
जल मांगन निकसा जब घर से,
तो तीरन की बौछार भई।।

जब कासिम बदंड़ा जूझ गयो,
तब ज्यूनड़ रूप अनूप भयो।
एक रात की ब्याही सुन्दरता,
तब लोथ पे आकर ठार भई।।

दरबार में जाकर हाकिम के,
ज़ैनब ने कहे ये शब्दे कड़े।
ओ कपटी पापी तू ही बता,
अब किसकी जीत और हार भई।।

वह कौन सा ऐसा भारतवासी है जो ये न जानता होगा कि ये मोहर्रम के 10 दिन रसूल के छोटे नाती हुसैन की शहादत के दिन हैं। कौन हुसैन? वह हुसैन कि जिनका नाम सुनते ही कर्बला के समाचार और मोहर्रम के अधिकार का चित्र हमारे नेत्रों के समक्ष फिर जाता है। अबसे तेरह सौ वर्ष पहले 61 हिजरी मे जब यज़ीद मुसलमानों के देश अरब में राज्य का मालिक और राजा था तो संसार पर पाप के बादलों का अंधेरा छाया हुआ था, इस धरती पर ग़रीबों के लहू की कोई क़ीमत न थी। संसार वाले पापी के रव (आधिक्य) में अपने पालनहार को भी भूल बैठे थे। माया के चमत्कार से सुख रोग की अग्नि में निगाहें बहकी हुई थीं। इस्लाम मिटाया जा रहा था, रोजत्रो और नमाज़ों का तमाशा बनायाा जा रहा था। माया के बन्दों ने मनमानी बातें और तलवार की शक्ति का नाम इस्लाम रख छोड़ा था। उनके हर काम और उनकी हर बात में बनावट और अन्याय का रात्य था। कुरबान के उपदेशों को अपनी इच्छा के सांचों मं ढाल लिया था। सत्य धर्म की चहत को लोगों ने छोढ़ दिया था और दौलत को सब कुछ मान बैठे थे। ग़रीबों की कोई इज़्ज़्त न थी। वही सब से बड़ा माना जाता था जो माया का मालिक ो, अमीरों के महलों में दिन रात शराब की बरसात थी। इन महापाप की अंधधुन्ध आंधियों में जहाँ अच्छी बात बुरी और सच्चाई की गरदन पर छुरी थी, जो दस बीस गिनती के धर्मी भी थे वह भी हज़ारों अध ार्मियों के डर से सर न उठा सकते थे। कौन था जो ऐसे समय में इस्लाम की डूबती हुई नांव को बचाता, कौन था जा` अल्लाह के एक होने की आवाज़ उठाता, कौन था जो रसूसल की धर्म की पराजय को विजय से बदल देता। हाँ हाँ था और वह केवल रसूल का छोटा नाती हुसैन था। जो समस्त संसार से अलग अपने नाना के रौज़े की सेवा और अल्लाह भक्ति में संलग्न थे। इन पापी, ख़ूनी हत्यारों ने चाहा कि उसे भी दुनिया से ख़त्म कर दें ताकि मनमानी रंगरेलियां मनाने के लिए रास्ता बिल्कुल साफ हो जाये। विचारशील व्यक्ति बिठाये गये, बहुत कुछ सोच विचार के बाद यह तय पाया कि उनको धोखे से कपट से या झूठ बोलकर मेहमान (अतिथि) बुलाया जाये कि हम आपके उपदेशों के प्यासे हैं, प्यारे पाठकों ऐसा ही हुआः-

संसार नज़र आया जो उपदेश का प्यासा
कूफ़े को चला घर से मुहम्मद का नवासा।।

न उनके साथ कोई फ़ौज थी, न उनका लड़ने का इरादा (विचार) था। कुछ उनके साथ के खेले हुए थे जो उनके चरणों से आ लगे थे, इनके घराने वाले, कुल के कुल (सब मिलाकर) स्त्रियों के अलावा छोटे बड़े मिलाकर बहत्तर (72) ब्यक्ति थे जिनमें एक छः मास का बालक अली असग़र भी थाए मगर ये सब अपनी आन, बान शान में पृथ्वी पर आकाश के चमकते तारे थे बल्कि यों कहूँ कि :-

भारत के बसैया न उन्हें हाथ से खोते
कहलाते वह अवतार जो इस देश में होते।

अब हुसैन उस कड़ी धूप में कठिन वादियों और रेगिस्तानी मैदानों की यात्रा पूरी करके कर्बला पहुँचे तो सुनों उनका स्वागत इस प्रकार किया गयाः-

जलती हुयी रेती पे बसे प्यास के मारे
खेमें भी न रहने दिये नद्दी के किनारे

हुसैन ने अल्लाह का नाम लेकर उसी तपते बन में डेरा डाल दिया। कूफ़ा और शाम से शत्रु की सेना पर सेना आती रही और सातवीं से मेहमानों (हुसैन और उनके साथियों) पर पानी भी बन्द कर दिया गया। नवीं तारीख़ तक 72 प्यासों से लड़ने के लिए दो लाख से अधिक सेना एकत्रित हो गयी किन्तु इस अल्लाह के नाम पर शीश कटाने वाले संत हुसेन की आन न घटना थी न घटीः-

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

क्या क्या बालक गोद के,
क्या क्या तनत जवान
दाता हर के नाम पर,
खूब दिया बलिदान

झूले का एक झलनहारा,
एक अट्ठारह साल
अकबर जैसा लाडला,
असग़र जैसा लाल

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

सिगरी बाड़ी धूप में,
सूख गयी बिन नीर
खेती प्यासी नीर की
तिसपर बरसे तीर

हंस हंस ऐसा पन किया
फूट के रोया पाप
सारा बाग़ लुटाये के
खोत रहे फिर आप

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

तुम भूके प्यासे खेमें में
जब निकसे शेर समान
बड़े बड़े बलवन्त सिपाही
छोड़ गये मैदान

घायल देही घाम अरब का
तीन दिना की प्यास
कर्बल बनके लड़ने वाले
किस विद्ध रहे हवास

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

तस तस मुखड़ा खिलत रहा
जस जस बाढ़ी धूप
प्यास बढ़ी संतोष बढ़ा
दूना चमका रूप

मन में ऐसी शांति
कोऊ कहाँ से लाये
लाखन कष्ट उठाये के
एक न निकसी हाय

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

बसती बसती जंगल जंगल
आज तुम्हारा मीत

उभरी शक्ति प्रेम की
भयी हार की जीत

हिन्दु, मुस्लिम, राजा प्रजा
जिन देखी गुन गाये
मन को हीरा पाये के
सभी लेवा अपनाये

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

स्वामी कितनी दूर से
लगा प्रेमी बान
उठी लहर फुरात से
पंहुची हिन्दुस्तान

भूमि राम कृष्ण की
कर्बल का संदेश
आँसू तुमरे सोग के
और गंगा जमुनी देश

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

ये दिन उन्हीं हुसैन की याद मनाने के दिन हैं जो कर्बला की पृथ्वी पर तीन दिन की भूक और प्यास में सर कटाये सोते हैं, जिनके पवित्र चरणों में दुनिया सर झुकाये है, उनके अनूप रूप और उनकी अनूप सेवा में आज दुनिया उनकी सेवा में रूमी भूमी है उनकी करूणाजनक गाथा मोहर्रम की दसवीं तारीख सूर्य डूबने से पहले समाप्त हो गयी :-

ग़म है उसी मज़लूम का मातम है उसी का
तेरह सौ बरस से ये मोहर्रम है उसी का
शब्बीर ने इस देश को जब याद किया था
इस्लाम का भारत में पता था न सिरा था
अब तक जो हैं अंजान कुछ ऐसे भी हैं भाई
हो जाती है मज़लूम के मातम पे लड़ाई
भूल अपनी है, हृदय मे जो ये गर्द जमी है
दोष उनका नहीं अपनी ही कोशिश में कमी है
जो हाल सुनाना था, सुनाया नहीं उनको
मेहमाँ का जनाज़ा है, बताया नहीं उनको।
भारत के सछूतो और अछूतो इधर आओ
मेहमान के ताबूत को सब मिलके उठाओ
खुद उसने किया था इधर आने का इशारा
मेहमाँ जो हमारा है, वह पहले है तुम्हारा
हर साल वह आता है मोहब्बत को बढ़ाने
आपस में गले हिन्दु व मुस्लिम को मिलाने
मेहमान का यूँ करते हैं आदर ये दिखा दो
शब्बीर की जय बोलके दुनिया को हिला दो
फिर खून मुसलमाँ का न हिन्दू का बहेगा
शब्बीर के सदक़े में सदा मेल रहेगा।।

दूसरी मजलिस

अकबर को सुकारे मरना था
धुन मौत की सिगरी रात रही।
माँ शीश लगाये छाती से,
बालों से लटी सुलझात रही।।

सब देश की शोभा साथ चली
जब देश से यह परदेस चले।
परदेस से जब परलोक गये
संसार की शोभा जात रही।।

सांचे ही रहे जो सांचे थे
यॉं सांच को कोई आंच नहीं
शब्बीर का बाला बोल रहा
इस्लाम की ऊँची बात रही।।

असग़र के गले पर तीर लगा
जल मांगत बन में सोए गये
दुखियारी माता आशा में
मन झूले से बहलात रही।।

कर्बल में अली की पुत्री ने,
यों रैन गुज़ारी दसवीं की
किस ठाठ से लड़कर मरते हैं
हर बालक को समझात रही।।

अब राजा प्रजा चौखट पर
सब शीश नवाये बैठे थे
जब छोड़ के दुनिया दीन लिया
दुनिया भी उन्हीं के हाथ रही।।

भारतवासियों, आज मोहर्रम की दसवीं तारीख है। कौन सी तारीख वह कि जिसमें रसूल के छोटे नाती हुसैन ने सत्य की सेवा और संसार की भलाई के लिए तीन दिन की भूक और प्यास में, कर्बला की धरती पर अपनी और अपने बच्चों और अपने दोस्तों की जानों का बलिदान दिया। कौन हुसैन! वह हुसैन कि जो अपने बलिदान से धनवानों, गरीबों, विधवाओं, अनाथों, बलवानों और कमजोरों, आजादों और गुलामों को एक ही संगम पर ले आये और समस्त संसार के बलवानों को उन्होंने प्रीति के कर्तव्य सिखलाये, उनके इस बलिदान ने ऐसा मंत्र फूंका कि दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक प्रेम का सागर लहराने लगा

ं जाति में मानवता जागृति हुयी जो झूठ की रक्षा करते थे वह सत्य की सेवा करने लगे, उनका मुकाबला इस पापी, खूनी हत्यारे से था जिसका नाम यज़ीद है, जो अरब के देश में उस समय राजा था जब-

सन् साठ था संसार में डाले हुये डेरा
छाया हुआ था पाप के बादल का अंधेरा।
भूला हुआ था पालने वाले को ज़माना
दुनिया में गरीबों का था न कोई ठिकाना।।
सुख रोग की अग्नि में थी दहकी हुयी नज़रें
माया के चमत्कार से बहकी हुयी नज़रें।।
अन्याय का था राज तो अपराध की जय थी
कुरान के उपदेश की बदली हुयी लय थी

हुसैन जैसे धुन के पक्के आज़ादी के देवता जो सत्य का एक समुन्द्र और न्याय की नैया के पतवार थे, वह क्योंकर अन्यार के धारे में बह जाते, उन्होंने मनुष्य के स्वभाविक और जनता के सामाजिक अधिकारों, हृदय की आज़ादी व जीवन की आबादी के लिए अपना खून बहाकर दिखला दिया कि देवताओं, संतो, सत्यवानों, स्वाभिमानियों और आज़ादी के मतवालों का कर्तव्य क्या है और हमको यह शिक्षा दी कि कभी शत्रु की ताक़त से न डरना, मौत के सामने हंसते खेलते रहना जो सत्य धर्म के प्रेम में मरेगा, वह संसार में क़यामत तक जीवित रहेगा। हुसैन और उनके साथियों और उनके बच्चे बच्चे की केवल एक इच्छा थी कि इन महापाप की अन्धाधुन आंधियों को रोक कर, इस्लाम की गिरती हुयी दीवार को संभाल लें, और अल्लाह के बंदों को बुराई से बचा लेंः-

साथी भी वह पाये जो ऋषि और मुनि थे
बच्चे भी तो इस घर के ज्ञानी थे गुनी थे।।
शब्बीर के कब्ज़े में था लश्कर न रियासत
सच्चाई की पूंजी थी और औलाद की दौलत
कर्तार की माया थी न अपनी न परायी
बेटा था बराबर का, बराबर का था भाई
भाई की कमाई थी बहिन के थे दुलारे
धरती पर चमकते हुये आकाश के तारे
सब छोटे बड़े मिलके थे गिनती में बहत्तर
इतने अभी कमसिन थे कि झूले में थे असग़र
अट्ठारह बरस वाले थे नाना की निशानी
थी रूप में अकबर के पयम्बर की जवानी

हुसैन ने जो सत्य का एक तीर एवं धार्मिक सेना के एक वीर थे अपने अमूल्य मोतियों को परमात्मों की भक्ति में भेंट चढ़ाना स्वीकार किया किन्तु यजीद जैसे पापी, अधर्मी, खूनी और हत्यारे की इस पापी रव में अपने आपको न बहा कर आज़ादी के मन्दिर को ढाने से बचा लिया। पापियों ने उनके खून की होली खेली परन्तु उनके शीश न झुके, कर्बला की इस अनोखी ध
रती पर यसरब के इस निर्दोष मुसाफिर ने सांच पर आंच न आने दी। आज का दिन उन्हीं के सोग का है, उनके शोक में संसार ने ऐसा योग लिया है कि अब यह सोग रहती दुनिया तक रहेगा, वह जीवित मरने वाले जिनके तेरह सौ वर्ष से हो रहे हैं, स्वयं तो खंजर के नीचे भी न तड़पे, किन्तु संसार के बसने वालों को तड़पा गये। उनकी सेना के नन्हें मुसाफ़िर अली असग़र का झूला खुद तो ठहर गया किन्तु हृदय वालों के हृदय में एक हालाडोला पैदा कर गया। कूफ़े वालों ने यह अनोखा अपराध तो किया कि तीन दिन की भूख और प्यास में उनका शीश काटकर मैदान की जलती रेत पर उनका लाशा डाल दिया, मगर संसार के देश विदेश में रहने और बसने वालों के हृदय से सुख चैन की माया छीन कर कुछ दोहे छोड़ दिये। हुसैन की यह दुख भरी कहानी

आज ही की तारीख सूरज डूबने से पहले समाप्त तो ज़रूर हो गयी किन्तु उनकी मज़लूमीयत की तलवार की चमक रन की जगमगाहट बनके रही। बस जलती हुई रेती पर अल्लाह की याद में उनके सिजदे जीवन की शोभा हो गये उनके शत्रुओं ने उन्हें जो दुख दिये तो स्वयं उन्हें भी कभी सुख न मिला, जिन हुसैन पर कल यह विपदा थी, वही आज सबके प्यारे हो गयेः-

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

प्रभु नामे गला कटायो,
घर भर दियेव लुटाये
सत की रक्षा अस करी,
कलयुग सीस नवाये।

तुमसा एक न निकसा कोऊ,
गुजरे बहुत हुसैन
ऐसी लीला रच गये,
तुम बिन जग बेचैन

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

जग को दुख में पाय के,
छोड़ा आपन गाँव
बन में डेरे डाल दिये,
देखी धूप न छाँव

कैसी रन की जातरी,
साथ लियो परिवार
सारे घर की लाडली,
छोड़ गयो बीमार।।

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

पापी जग के पाप का,
कोई न सूझा तोड़।
कैसे कैसे धरम् पुजारी,
बैठ गये जी छोड़।।

आपन लहू बहाये के,
तुमने बदला रंग।
नाम गया आकाश तक,
धरती रह गई दंग

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

अस था हाल गरीब का,
जैसे जीती लाश
धन दौलत के ज़ोर ने,
धरम् किया था नाश

ऐसी करनी कर गये,
निश्चय भया समाज
झूठा खेल बिगाड़ के,
रख ली सत की लाज

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

आँसू निकसे नयन से,
मन की निकसी खोट
सायीं तुमरे नाम की
पड़ी करारी चोट

बिजली चमकी प्रेम की,
जिव भया उजजार
बादल गरजे मातमी,
चीख पड़ा संसार

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

सब ही कष्ट उठाये के
गये अली के लाल
भारत सेवक भूक की,
आज करे हड़ताल

अन से जब अनबन भयी,
मन से निकसे बैन
'नजमी' सत्य की टेक पर,
प्यासे लड़े हुसैन

दो जग के सहारे क्या कहना,
सत जग के सितारे क्या कहना

प्यारे पाठकों! जब वह पापी ख़ूनी हत्यारे कर्बल नगरी मे आज ही की तारीख़ हुसैन और उनके साथियों को मार चुके तो यह अनोखा अपराध किया कि उनके घर की स्त्रियों को लूट लिया। उनके नन्हें नन्हें बच्चों को थप्पड़ मारे, उनके घर का सब सामान लूटकर उनके ख़ेमों में आग लगा दी। उस समय सारे संसार में काली आँधी चल रही थी आसमान से खून की वर्षा हो रही थी, हुसैन का खेमा नहीं जल रहा था बल्कि कुल संसार में आग लगी हुयी थीः-

भयानक करबल का बन है,
कि एक हलचल सी बरपा है
उधर आकाश पर चारों
तरफ़ छाया अंधेरा है

लगी है आग दुनिया में,
धुवां जंगल से उठता है
है मन संसार का व्याकुल
फ़ज़ा से ख़ूँ बरसता है
है ऐसा कष्ट नद्दी का
कि पानी सर पटकता है



"जिस तरह तुम्हें अपने ऊपर ज़ुल्म पसन्द नहीं, दूसरों पर तुमभी ज़ुल्म मत करो"।

"जैसा अपने लिये पसन्द करो, वैसा ही दूसरों के लिए भी।"

-हज़रत इमाम हुसैन अ०

सलाम

'नदल हिन्दी'

दिल को ग़मे हुसैन का ख़ूगर बना दिया
कमज़ोर दिल को अपने क़वीतर बना दिया

बंदी को लुत्फ़े शह ने सुख़नवर बना दिया
क़तरे को बहर, नुक़्ते को दफ़्तर बना दिया

ये मातमे हुसैन का एहसान देखिये
वीरान घर था, ख़ुल्द से बेहतर बना दिया

सरवर ने हुर के अश्क़े निदामत को पोंछ कर
क़तरे को इक नज़र में समन्दर बना दिया

देखो लताफ़तें निगहे लुत्फ़बार की
काँटे को मुसकुरा के गुलेतर बना दिया

कट कर भी सर तिलावते आयात ही करे
नैज़े तलक को शाह ने मिम्बर बना दिया

बेहतर हयात मौत से है, पर हुसैन ने
लो ज़िन्दगी को मौत से बेहतर बना दिया

हुब्बे अली ने कितनी चमक दी है क़ल्ब को
ज़र्रे को आफ़ताब का हमसर बना दिया।

फ़ितरत पे हमला करने बढ़े जब भी संग दिल
अश्क़ो का मैने जल्द ही लश्कर बना दिया

समझो अज़ाये शाह में रोने की अज़मतें
क़ुदरत ने अश्क बनते ही गौहर बना दिया

तब्लीग़ हो रही है दयारे यज़ीद में
वहदत ने क़ैदियों को पयम्बर बना दिया

लिखना है मरसिया तुझे प्यासो का ऐ 'नदा'
अच्छा किया कि आँखों को साग़र बना दिया

